क्रिया

जिस पद से किसी कार्य का करने या होने का बोध होता है, उसे क्रियापद कहते हैं; जैसे - पढ़ना, लिखना आदि।

क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं; जैसे- पढ, लिख । इनके साथ 'ना' जोड़ने से **क्रिया बनती है**। धातु के दो प्रकार हैं।

१. मूल धातु - जा, पढ़, आदि।

२. यौगिक धातु - मूलधातु के साथ दूसरे शब्द (प्रत्यय) आदि जोड़ने से यौगिक धातु बनती है। जैसे - 'खा' के साथ प्रेरणार्थक प्रत्यय 'ला' जोड़ने से 'खिलाना' क्रिया बनती है। दो या दो से अधिक धातुओं को जोड़ने से संयुक्त धातु बनती है।

क्रिया के भेद

क्रिया के अनेक भेद होते हैं। उनमें से कुछ प्रमुख भेदों पर यहाँ विचार किया जा रहा है—

१. रचना के आधार पर

(i) मूल क्रिया : जैसे— पढ़ना, लिखना आदि

(ii) यौगिक क्रिया : जैसे — पढ़ सकना, लिख देना आदि।

२. कर्म के आधार पर

कर्म के आधार पर क्रिया के तीन भेद हो सकते हैं (i) सकर्मक (ii) द्विकर्मक (iii) अकर्मक ।

(i) सकर्मक क्रिया : 'राम फल खाता है' । इस वाक्य में 'खाना' क्रिया सकर्मक है, क्योंकि 'फल' कर्म है। इस प्रकार खाना, लिखना, पढ़ना, पीना, काटना आदि

क्रियाएँ सकर्मक होती हैं। वाक्य में कर्म न आने पर भी कर्म की संभावना बनी रहती है। इसलिए ये क्रियाएँ सर्वदा सकर्मक हैं।

(ii) **द्विकर्मक क्रिया :** मोहन सोहन को पुस्तक देता है ।

इस वाक्य में क्रिया 'देना' है। इसके दो कर्म हैं । सोहन और पुस्तक। इसलिए यह द्विकर्मक क्रिया है। कहना, पूछना, पढ़ाना, आदि द्विकर्मक क्रियाएँ हैं।

(iii) **अकर्मक क्रिया :** 'घोड़ा दौड़ता है।' इस वाक्य में दौड़ना क्रिया किसी कर्म की अपेक्षा नहीं रखती। प्रश्न करें - क्या दौड़ा? किसको दौड़ा? उत्तर में कुछ नहीं आता। अतएव दौड़ना अकर्मक क्रिया है। इसी प्रकार जाना, आना, कूदना, उड़ना, तैरना आदि अकर्मक क्रियाएँ हैं।

३. समाप्ति के आधार पर

कार्य के समाप्त होने या न होने के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं।

(i) समापिका क्रिया - घोड़ा दौड़ता था।
राम घर जाएगा।

ऊपर के वाक्यों के अंत में आने वाली क्रियाएँ कार्यों तथा वाक्यों की समाप्ति का बोध कराती हैं, अतएव इनको समापिका क्रिया कहते हैं।

(ii) असमापिका क्रिया : रमेश रोज खाकर दफ्तर जाता है।
गाड़ी अब आनेवाली है।

ऊपर के वाक्यों में 'खाकर' 'आनेवाली' ऐसी क्रियाएँ हैं जिनकी समाप्ति या पूर्णता नहीं हो पायी है। अतएव ऐसी क्रियाएँ असमापिका क्रियाएँ हैं। इन्हें 'कृदन्त' भी कहते हैं।

४. कार्य व्यापार की प्रधानता के आधार पर

कार्य-व्यापार की प्रधानता के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं –

(i) **मुख्य क्रिया** (ii) **सहायक क्रिया**

(i) **मुख्य क्रिया** : जिस क्रिया से एक मात्र मुख्य कार्य व्यापार का बोध होता है, उसे मुख्य क्रिया कहते हैं; जैसे –

'वह स्कूल गया'। इस वाक्य में 'जाना' मुख्य क्रिया है।

(ii) **सहायक क्रिया :**

जिस क्रिया के द्वारा मुख्य क्रिया में अर्थभेद उत्पन्न करने में सहायता मिलती है, उसे सहायक क्रिया कहते हैं; जैसे –

कमला का पत्र पढ़ा गया।

इस वाक्य में 'गया' मुख्य क्रिया 'पढ़ना' में अर्थ भेद उत्पन्न करने में सहायता कर रही है।

हिन्दी में सहायक क्रियाएँ अनेक प्रकार की होती हैं। क्योंकि ये मुख्य क्रिया की कई तरह से सहायता करके अर्थभेद उत्पन्न कर सकती हैं; जैसे -

(i) कालसूचक सहायक क्रिया - बच्चा रो रहा है। (क्रिया चल रही है)

(ii) वाच्य सूचक सहायक क्रिया - चिट्ठी भेजी गयी। (वाच्य की सूचना)

(iii) वृत्ति सूचक सहायक क्रिया - शायद उसने पढ़ा होगा।

(संभावना वृत्ति की सूचना)

(iv) संम्मिश्र क्रिया सूचक सहायक क्रिया - उसे साड़ी पसंद आयी।

('पसंद' के साथ 'आना' का मिश्रण)

(v) पक्ष सूचक सहायक क्रिया - हम इतिहास पढ़ रहे हैं (अपूर्णता बोधक)

(vi) रंजक सहायक क्रिया - बच्ची काँप उठी।

(मुख्य क्रिया 'काँपना' को विशिष्टता प्रदान करती है 'उठी' क्रिया। यह रंजकता या विशेषता द्योतन करती है।)

५. संयुक्त क्रियाएँ

जब एक से अधिक क्रियाओं का प्रयोग हो और क्रिया व्यापार की नई विशेषता का बोध हो तो उन क्रियाओं को संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे – रो उठना, चल पड़ना, लिख डालना आदि। इनमें एक मुख्य क्रिया है, जो धातु रूप में है; जैसे– रो, चल, आदि। दूसरी क्रिया मुख्य कार्यव्यापार में कोई खास वैशिष्ट्य लाने में सहायता करती है; जैसे– उठना या पड़ना आदि। इनको सहायक क्रिया कहते हैं।

६. प्रेरणार्थक क्रियाएँ

कर्त्ता की प्रेरणा से होनेवाले कार्य की क्रिया को 'प्रेरणार्थक क्रिया' कहा जाता है। अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं से प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनती हैं। जो कर्त्ता कार्य करने की प्रेरणा देता है, वह 'प्रेरक कर्त्ता' कहलाता है और जो कार्य करने के लिए प्रेरित होता है उसे 'प्रेरित कर्त्ता' कहते हैं। इसमें प्रेरित कर्त्ता स्वयं कर्त्ता होने पर भी व्याकरणिक दृष्टि से 'को' या 'से' परसर्गयुक्त होने से क्रमशः 'कर्म' या 'करण' बन जाता है;

जैसे – माँ ने बच्चे को दूध पिलाया।

माँ ने आया से बच्चे को दूध पिलवाया

(उक्त दोनों वाक्यों में माँ 'प्रेरक कर्त्ता' है। पहले वाक्य में 'बच्चे को' प्रेरित कर्त्ता है, जो कर्म के स्थान पर आया है। दूसरे वाक्य में 'आया से' 'करण' के स्थान पर आया है।)

प्रेरणार्थक क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं – **प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक**।

(i) **प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया :** कार्य व्यापार में कर्त्ता प्रत्यक्ष भाग लेता है। (प्रथम वाक्य)

(ii) **द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया :** कार्यव्यापार में कर्त्ता प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लेता। पर उसकी प्रेरणा से कोई दूसरा कार्यव्यापार का संपादन करता है। (द्वितीय वाक्य)

प्रेरणार्थक क्रियाओं के रूप-परिवर्त्तन के नियम

१. मूल धातु में 'आना' जोड़कर प्रथम प्रेरणार्थक और 'वाना' जोड़कर द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया रूप बनाया जाता है; जैसे –

मूल धातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
उग	उगाना	उगवाना
खिल	खिलाना	खिलवाना
दौड़	दौड़ाना	दौड़वाना
पढ़	पढ़ाना	पढ़वाना
लिख	लिखाना	लिखवाना
सुन	सुनाना	सुनवाना
हँस	हँसाना	हँसवाना

२. कुछ मूलधातु में पहेल मात्रा परिवर्त्तन कर दिया जाता है (आ का अ) (ई / ए का इ) (ऊ/ ओ का उ)। फिर आना जोड़कर प्रथम प्रेरणार्थक और 'वाना' जोड़कर द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियारूप बनाया जाता है; जैसे –

मूलधातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
काट	कटाना	कटवाना
खेल	खिलाना	खिलवाना
घूम	घुमाना	घुमवाना
छोड़	छुड़ाना	छुड़वाना
जाग	जगाना	जगवाना

डूब	डुबाना / डुबोना	डुबवाना
नाच	नचाना	नचवाना
बोल	बुलाना	बुलवाना

३. स्वरांत धातु में पहले मात्रा परिवर्त्तन करके (आ/ई/ए का इ) (ऊ/ओ का उ), फिर 'लाना' जोड़कर प्रथम प्रेरणार्थक तथा 'लवाना' जोड़कर द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियारूप बनाया जाता है; जैसे –

मूलधातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
खा	खिलाना	खिलवाना
छू	छुलाना	छुलवाना
जी	जिलाना	जिलवाना
दे	दिलाना	दिलवाना
पी	पिलाना	पिलवाना
रो	रुलाना	रुलवाना
सो	सुलाना	सुलवाना

४. कुछ धातुओं के दो-दो रूप बनते हैं; जैसे –

मूलधातु	**प्रथम प्रेरणार्थक**	**द्वितीय प्रेरणार्थक**
कह	कहाना, कहलाना	कहवाना / कहलवाना
देख	दिखाना/दिखलाना	दिखवाना/दिखलवाना
बैठ	बिठाना/बिठलाना	बिठवाना/बिठलवाना
सीख	सिखाना/सिखलाना	सिखवाना/सिखलवाना

(5) कुछ क्रियाओं के 'प्रथम प्रेरणार्थक' रूप नहीं बनते, जैसे - खेना, खोना, गाना, ढोना, पीटना, भेजना, लेना।

(6) कुछ क्रियाओं के कोई भी प्रेरणार्थक रूप नहीं बनते, जैसे - आना, गँवाना, चाहना, जँचना, जानना, जाना, पाना, मिलना, सोचना, होना।

काल

कार्य के समय, कार्य की पूर्णता, या अपूर्णता का बोध करने के लिए क्रिया में होनेवाले परिवर्त्तन को 'काल' कहते हैं । ये तीन प्रकार के हैं - भूतकाल, वर्त्तमानकाल, भविष्यत् काल।

१. भूतकाल

जिससे कार्य के बीते हुए समय में होने का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते हैं। इसके छह भेद होते हैं; –

सामान्य, आसन्न, पूर्ण, अपूर्ण, संदिग्ध, हेतुहेतुमद्

(i) **सामान्य भूतकाल :** इससे बीते हुए समय का तो बोध होता है, पर विशेष समय का बोध नहीं होता; जैसे –

मैंने लिखा।	मैं गया।	तू गयी।
हमने लिखा।	हम गये।	वे गयीं।

(ii) आसन्न भूतकाल : इससे पता चलता है कि कार्य भूतकाल में आरंभ हुआ था, कुछ समय पहले समाप्त हो गया है; जैसे –

उसने रोटी खायी है।	आप गये हैं।
गोपाल ने केले खाये हैं।	हम दौड़ी हैं।

(iii) **पूर्ण भूतकाल :** इससे पता चलता है कि कार्य बहुत पहले समाप्त हो चुका है; जैसे –

मैंने केला खाया था।	उसने कहा था।
राजू आया था।	वे तैरे थे।

(iv) **अपूर्ण भूतकाल :** इससे पता चलता है कि कार्य भूतकाल में हो रहा था, पर उसके समाप्त होने का पता नहीं चलता; जैसे –

हम पढ़ रहे थे। मैं जा रही थी।

हम पढ़ते थे। मैं जाती थी।

(v) **संदिग्ध भूतकाल :** इसमें कार्य के भूतकाल में होने में सन्देह प्रकट किया जाता है। अतः यह स्पष्ट नहीं होता कि कार्य पूरा हुआ या नहीं; जैसे –

चोर अब तक भाग गया होगा। उसने लडडू खाया होगा।

वे अब तक पहुँच गये होंगे। उसने दो लड्डू खाये होंगे।

(vi) **हेतुहेतुमद् भूतकाल**

इससे पता चलता है कि भूतकाल में कार्य होनेवाला था, पर किसी कारण नहीं हो पाया, क्योंकि शर्त पूरी न हो सकी; जैसे –

राम आता तो गीत गाता। वर्षा होती तो स्कूल बन्द होता।

हम जाते तो वह आती। उसने पत्र लिखा होता तो मैंने उसे बुलाया होता।

२. वर्त्तमान काल :

जिससे कार्य के वर्त्तमान समय में होने का बोध होता है, उसे वर्त्तमान काल कहते हैं। इसके चार भेद होते हैं :– सामान्य, तात्कालिक, संदिग्ध, संभाव्य।

(i) **सामान्य वर्त्तमान काल :** इससे कार्य के वर्त्तमान समय में होने का पता तो चलता है, पर निश्चित समय का बोध नहीं हो पाता; जैसे –

हम रोटी खाते हैं। मुझे हिन्दी आती है।

मछली पानी में रहती है। लड़के मैदान में खेलते हैं।

(ii) **तात्कालिक वर्त्तमानकाल** : इससे पता चलता है कि कार्य वर्त्तमानकाल में हो रहा है, पर पूरा नहीं हुआ है; जैसे –

पिताजी चिट्ठी लिख रहे हैं।

बच्चा चाँद देख रहा है।

चिड़िया आसमान में उड़ रही है।

(iii) **संदिग्ध वर्त्तमानकाल** : इससे वर्त्तमानकाल में कार्य के होने में सन्देह प्रकट होता है; जैसे –

लड़के पढ़ते होंगे। लड़की पढ़ रही होगी।

मदन आता ही होगा। वह जा रहा होगा।

(iv) **संभाव्य वर्त्तमानकाल** : इससे वर्त्तमानकाल में कार्य होने की संभावना का पता चलता है; जैसे –

संभवतः वह खाता हो।

संभवत वह पढ़ता हो।

३. भविष्यत् काल

इस काल की क्रिया से आनेवाले या भविष्य के समय का बोध होता है। इसके तीन भेद होते हैं ; जैसे – सामान्य, संभाव्य, हेतुहेतुमद्।

(i) **सामान्य भविष्यत्काल** : इससे बोध होता है कि आनेवाले समय में कार्य सामान्यतः सम्पन्न होगा; जैसे –

मैं गीत गाऊँगी। वह भुवनेश्वर जाएगा।

(ii) **संभाव्य भविष्यत् काल** : इससे बोध होता है कि भविष्य में कार्य होने की संभावना है; जैसे –

संभवतः उमेश कल आए।

हो सकता है, दो दिनों में बारिश हो।

(iii) **हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल** : इससें बोध होता है कि भविष्य में इस कार्य का होना, किसी दूसरे कार्य के होने पर निर्भर करता है; जैसे –

वह आए तो मैं जाऊँ।

वे हमारी बात मानें ते हम सभा में जाएँ।

अभ्यास

१. 'क्रिया' किसे कहते हैं?

२. क्रिया के मूलरूप को क्या कहते हैं? उससे क्रिया कैसे बनायी जाती है?

३. 'यौगिक धातु' किसे कहते हैं? उसके भेदों के नाम लिखिए।

४. निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए –

दौड़ना, लिखना, सुनना, चलना, पढ़ना, सोना

५. निम्नलिखित धातुओं के प्रथम और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप बनाइए –

काट, खेल, घूम, जाग, लेट, डूब, नाच

६. अकर्मक और सकर्मक क्रिया में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर समझाइए।

७. 'क' स्तंभ में कुछ वाक्य और 'ख' स्तंभ में कालों के नाम दिये गये हैं। वाक्यों के साथ कालों का मिलान करके लिखिए –

'क' स्तंभ	'ख' स्तंभ
मैंने खाना खा लिया है।	संभाव्य भविष्यत्
तुम कहानी लिखोगी।	सामान्य भूत
वह नवीं कक्षा में पढ़ता होगा।	सामान्य भविष्यत्
नानी पुराण पढ़ रही थी।	हेतुहेतुमद् भूत
मैं पढ़ रहा होऊँ।	हेतुहेतुमद् भविष्यत्
संभवतः वे पढ़ें।	सामान्य वर्त्तमान
आप कहें तो मैं जाऊँ।	संदिग्ध वर्त्तमान
धूप होती तो कपड़े सूख जाते।	आसन्न भूत
वह पाठ पढ़ चुका है।	संभाव्य वर्त्तमान
उसने कहा था।	आसन्न भूत
रमेश ने आम खाये हैं।	पूर्ण भूत

SP 10/11/2016

८. निम्नलिखित वाक्यों को क्रियाओं की विभिन्न कालों में बदलकर लिखिए –

वर्त्तमान	भूत	भविष्य
हम रोज स्कूल जाते हैं।	हम रोज स्कूल जाते थे।	हम रोज स्कूल जायेंगे।
----------	वह गया।	----------
----------	उसने खाना खाया है ।	----------
रानी पुस्तक पढ़ रही है।	----------	----------
मंजु रोटी खाती है।	----------	----------
----------	उसने कहा था।	----------
----------	सब लोग पढ़ रहे थे।	----------
शायद वह आता होगा।	----------	----------
----------	----------	वह दिल्ली जाएगा।
----------	रेलगाड़ी चल रही थी।	----------
लड़के मैदान में खेलते हैं।	----------	----------
लड़कियाँ गीत गाती हैं।	----------	----------
----------	वर्षा होती थी।	----------
----------	कौआ उड़ रहा था।	----------
----------	----------	हम पत्र लिखेंगे।
ताला खोला जाता है।	----------	----------
----------	----------	संभवतः वह कल जाए ।
रोजी से चला नहीं जाता।	----------	----------
घोड़े दौड़ते हैं।	----------	----------
पत्र भेज देना है।	----------	----------

९. निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए:-

मुख्यक्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
हँसना	....	....
खेलना	....	....
खाना	....	....
पढ़ना	....	....
लिखना	....	....
देखना	....	....
सोना	....	....
सीखना	....	....
रोना	....	....
चलना	....	....
सुनना	....	....
उगना	....	....
काटना	....	....
नाचना	....	....
बोलना	....	....
दौड़ना	....	....
देना	....	....
पीना	....	....
कहना	....	....
जागना	....	....

१०. निम्नलिखित क्रिया पदों के सामने सकर्मक या अकर्मक लिखिए। इनको लगाकर एक-एक वाक्य भी बनाइए।

खाना	----------	----------
जाना	----------	----------
हँसना	----------	----------
लिखना	----------	----------
पढ़ना	----------	----------
रोना	----------	----------
आना	----------	----------
लाना	----------	----------
कहना	----------	----------
तैरना	----------	----------
दौड़ना	----------	----------
देना	----------	----------
पीना	----------	----------
सीखना	----------	----------
काटना	----------	----------
फटना	----------	----------
पिलाना	----------	----------
उड़ना	----------	----------
नाचना	----------	----------
गाना	----------	----------

गिरना ---------- ----------

भेजना ---------- ----------

काँपना ---------- ----------

कूदना ---------- ----------

दुहना ---------- ----------

खिलाना ---------- ----------

११. निम्नलिखित क्रियाओं के पाँच-पाँच उदाहरण दीजिए।

(१) मुख्य क्रिया : .....

.....

.....

(२) सहायक क्रिया : .....

.....

.....

(३) संयुक्त क्रिया : .....

.....

.....

(४) द्विकर्मक क्रिया : .....

.....

.....